I.

Lecture Series No:- 71.

Online Class
Date.-10/7/2020.
Time-10:00 to 10:50 A.M

Topic,

(1) Mimamsa.

Dr. Surita Kumari
Department of Philosophy.
B.A Part-I
Paper-(5.)
A.N.D. College Shahpur Patory.
Samastipur.

Ans:→ कुछ मिमांसकों के मतानुसार स्वर्ग ही जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। इस विचार के पोषक जैमिनी और शबर हैं। स्वर्ग को दुःख से शून्य शुद्ध सुख का स्थान कहा गया है। स्वर्ग की प्राप्ति कर्म

के द्वारा ही संभव है। जो स्वर्ग चाहते हैं उन्हें कर्म करना चाहिए। स्वर्ग की प्राप्ति यज्ञ, बलि आदि कर्मों के द्वारा ही संभव है।

प्रश्न उठता है कि किन-किन कर्मों का पालन वांछनीय है?
मीमांसा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहती है कि उन्हीं

P.T.O.

कर्मों का पालन आवश्यक है जो धर्म के अनुकूल है। मीमांसा

वैदिक कर्मकाण्ड को ही (मीमांसा) मानती है।

वेद नित्य ज्ञान के भंडार तथा अपौरुषेय है। यज्ञ, बलि, हवन आदि के पालन का निर्देश, वेद में निहित है,

जिनके अनुष्ठान से ही व्यक्ति धर्म को अपना सकता है।

अतः धर्म का अर्थ वेद-विहित है, जिनके अनुष्ठान से ही व्यक्ति धर्म को अपना सकता है।

अतः धर्म का अर्थ वेद-विहित कर्तव्य है। ऐसे कर्म जिनके अनुष्ठान में वेद सहमत नहीं है। तथा जिन कर्मों पर वेद में निषेध दिया गया है, उनका परित्याग आवश्यक है। etc.

END